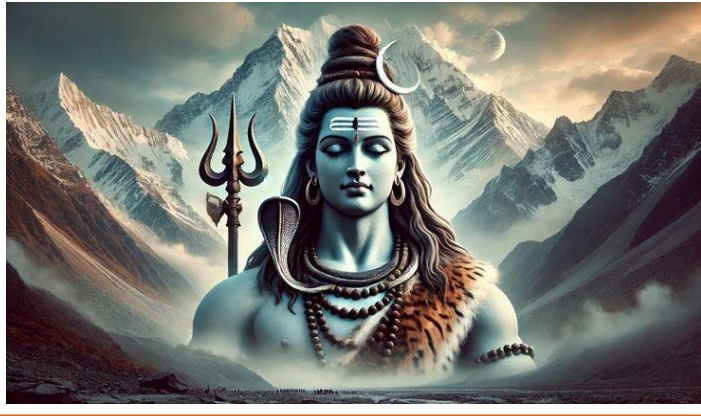




Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shri Shiva Sahasranama Stotram | श्री शिव सहस्रनाम स्तोत्रम् | PDF

ॐ

श्री परमात्मने नमः

॥ अथ श्री शिवसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै शिवाय प्रभविष्णवे ।

अर्थ – जिनके स्मरण करने मात्र से मनुष्य जन्म-मृत्यु रूप
संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है, समस्त सृष्टि के कारणभूत
उन भगवान शिव को नमस्कार है।

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय शिवाय प्रभविष्णवे ।

अर्थ – सम्पूर्ण प्राणियों के आदि कारण, जगत को धारण
करने वाले, अनेक रूप धारण करने वाले और सर्वशक्तिमान
भगवान शिव को प्रणाम है।



श्लोक 1

शिवो हरः मृडो रुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः ।
अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शम्भुर्महेश्वरः ॥

1. शिवः – कल्याणस्वरूप 2. हरः – पाप और दुःख हरने वाले 3. मृडः – सुख और कृपा देने वाले 4. रुद्रः – संहारकर्ता एवं दुःखनाशक 5. पुष्करः – पोषण करने वाले 6. पुष्पलोचनः – कमल जैसे नेत्र वाले 7. अर्थिगम्यः – भक्तों को सहज प्राप्त 8. सदाचारः – उत्तम आचरण वाले 9. शर्वः – संहार करने वाले 10. शम्भुः – आनंद देने वाले 11. महेश्वरः – महान ईश्वर

श्लोक 2

चन्द्रपीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वं विश्वम्भरेश्वरः ।
वेदान्तसारसंदोहः कपाली नीललोहितः ॥

12. चन्द्रपीडः – चंद्र को धारण करने वाले 13. चन्द्रमौलिः – मस्तक पर चंद्रधारी 14. विश्वम् – सम्पूर्ण जगत स्वरूप 15. विश्वम्भरेश्वरः – जगत का पालनकर्ता 16. वेदान्तसारसंदोहः – वेदान्त का सार 17. कपाली – कपाल धारण करने वाले 18. नीललोहितः – नीले और लाल आभा वाले

श्लोक 3

ध्यानाधारोऽपरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः ।
अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गः स्वर्गसाधनः ॥

19. ध्यानाधारः – ध्यान का आधार 20. अपरिच्छेद्यः – असीम, अपरिमित 21. गौरीभर्ता – माता पार्वती के पति 22. गणेश्वरः – गणों के स्वामी 23. अष्टमूर्तिः – आठ रूपों में



24. विश्वमूर्तिः – विश्वरूप 25. त्रिवर्गः – धर्म, अर्थ, काम के दाता 26. स्वर्गसाधनः – स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाले

श्लोक 4

ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः ।
वामदेवो महादेवः पतिः सर्वस्य भूतिनः ॥

27. ज्ञानगम्यः – ज्ञान द्वारा प्राप्त होने वाले 28. दृढप्रज्ञः – अटल बुद्धि वाले 29. देवदेवः – देवताओं के भी देव 30. त्रिलोचनः – तीन नेत्रों वाले 31. वामदेवः – कोमल एवं मंगलमय रूप 32. महादेवः – महान देव 33. पतिः सर्वस्य भूतिनः – समस्त प्राणियों के स्वामी

श्लोक 5

भूतभव्यभवन्नाथः प्रभुः भूतिभूषणः ।
भूतात्मा भूतभावनः ॥

34. भूतभव्यभवन्नाथः – भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी 35. प्रभुः – सर्वशक्तिमान स्वामी 36. भूतिभूषणः – विभूति (भस्म) से अलंकृत 37. भूतात्मा – समस्त प्राणियों में स्थित आत्मा 38. भूतभावनः – सबका पालन करने वाले

श्लोक 6

शर्वः शर्वरीनाथः शूलपाणिः पिनाकधृत् ।
उग्रः पशुपतिः स्थाणुः महायोगी महातपाः ॥

39. शर्वः – संहार करने वाले 40. शर्वरीनाथः – रात्रि के स्वामी 41. शूलपाणिः – त्रिशूल धारण करने वाले



42. पिनाकधृत् – पिनाक धनुष के धारक 43. उग्रः – प्रचंड रूप वाले 44. पशुपतिः – समस्त जीवों के स्वामी 45. स्थाणुः – अचल, अडिग 46. महायोगी – महान योगी 47. महातपाः – महान तपस्वी

श्लोक 7

भीमः परशुहस्तश्च मृगव्याधो जटाधरः ।
कैलासवासी कवची कठोरः त्रिपुरान्तकः ॥

48.भीमः – अत्यंत भयानक एवं शक्तिशाली 49. परशुहस्तः – हाथ में परशु (फरसा) धारण करने वाले 50. मृगव्याधः – मृग के शिकारी रूप 51. जटाधरः – जटाएँ धारण करने वाले 52. कैलासवासी – कैलास पर्वत में निवास करने वाले 53. कवची – कवचधारी 54. कठोरः – कठोर तपस्वी 55. त्रिपुरान्तकः – त्रिपुरासुर का संहार करने वाले

श्लोक 8

वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ।
सामप्रियः स्वरमयः त्रयीमूर्ति रणीश्वरः ॥

56.वृषाङ्कः – ध्वज पर वृषभ चिह्न वाले 57. वृषभारूढः – नंदी (वृषभ) पर आरूढ 58. भस्मोद्धूलितविग्रहः – भस्म से अलंकृत शरीर 59. सामप्रियः – सामवेद प्रिय 60. स्वरमयः – स्वरूप से ही नादमय 61. त्रयीमूर्तिः – तीन वेदों के स्वरूप 62. रणीश्वरः – युद्ध के स्वामी

श्लोक 9

सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः ।



हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः ॥

63.सर्वज्ञः – सब कुछ जानने वाले 64. परमात्मा – परम आत्मा 65. सोमसूर्याग्निलोचनः – चंद्र, सूर्य और अग्नि नेत्र वाले 66. हविर्यज्ञमयः – यज्ञ स्वरूप 67. सोमः – अमृतमय, शीतल 68. पञ्चवक्त्रः – पाँच मुख वाले 69. सदाशिवः – सदा कल्याणस्वरूप

श्लोक 10

विश्वेश्वरो वीरभद्रः गणनाथः प्रजापतिः ।
हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरिशोत्तमः ॥

70.विश्वेश्वरः – सम्पूर्ण विश्व के ईश्वर 71. वीरभद्रः – वीर रूपधारी 72. गणनाथः – गणों के स्वामी 73. प्रजापतिः – समस्त प्रजा के पालक 74. हिरण्यरेताः – स्वर्ण तेजस्वी बीज वाले 75. दुर्धर्षः – जिन्हें जीतना कठिन है 76. गिरीशः – पर्वतों के स्वामी 77. गिरिशोत्तमः – श्रेष्ठ गिरिश

श्लोक 11

श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्च कपर्दी नीललोहितः ।
मृडो रुद्रो पशुपतिः शम्भुः चन्द्रशेखरः ॥

78.श्रीकण्ठः – मंगलमय कंठ वाले 79. शितिकण्ठः – विषधारण से श्वेत/नील कंठ वाले 80. कपर्दी – जटाधारी 81. नीललोहितः – नील एवं लाल आभा वाले 82. मृडः – सुख प्रदान करने वाले 83. रुद्रः – दुःख हरने वाले 84. पशुपतिः – जीवों के स्वामी 85. शम्भुः – कल्याण देने वाले 86. चन्द्रशेखरः – मस्तक पर चन्द्र धारण करने वाले



श्लोक 12

त्रिनेत्रः शूलपाणिश्च पिनाकी परमेश्वरः ।
उमापतिः महेशानो भक्तवत्सल ईश्वरः ॥

87. त्रिनेत्रः – तीन नेत्रों वाले 88. शूलपाणिः – त्रिशूलधारी 89.
पिनाकी – पिनाक धनुषधारी 90. परमेश्वरः – सर्वोच्च ईश्वर 91.
उमापतिः – माता उमा के पति 92. महेशानः – महान ईश्वर
93. भक्तवत्सलः – भक्तों से प्रेम करने वाले 94. ईश्वरः –
सर्वाधिपति

श्लोक 13

कालकालः कृत्तिवासाः कृपालुर्वेदवित् प्रभुः ।
वेदाङ्गो वेदवित् श्रेष्ठो वेदगर्भः सनातनः ॥

95. कालकालः – काल के भी काल 96. कृत्तिवासाः – गजचर्म
धारण करने वाले 97. कृपालुः – दयालु 98. वेदवित् – वेदों के
ज्ञाता 99. प्रभुः – सर्वसमर्थ स्वामी 100. वेदाङ्गः – वेदों के
अंगस्वरूप 101. वेदवित् श्रेष्ठः – श्रेष्ठ वेदज्ञ 102. वेदगर्भः – वेदों
को धारण करने वाले 103. सनातनः – आदि-अनादि

श्लोक 14

धूर्जटिर्धरणीधरः योगी योगविदां वरः ।
योगेश्वरः महायोगी योगात्मा योगनायकः ॥

104. धूर्जटिः – जटाओं में गंगा धारण करने वाले 105.
धरणीधरः – पृथ्वी को धारण करने वाले 106. योगी – योग में
स्थित 107. योगविदां वरः – योगियों में श्रेष्ठ 108. योगेश्वरः –
योग के ईश्वर 109. महायोगी – महान योगी 110. योगात्मा –
योगस्वरूप 111. योगनायकः – योग के नेता



श्लोक 15

भस्मप्रियः भस्मशायी भस्मोद्धूलितविग्रहः ।
भूतनाथः महादेवो लोकनाथः जगद्गुरुः ॥

112. भस्मप्रियः – भस्म प्रिय रखने वाले, 113. भस्मशायी – भस्म में शयन करने वाले, 114. भस्मोद्धूलितविग्रहः – भस्म से विभूषित, 115. भूतनाथः – प्राणियों के स्वामी, 116. महादेवः – महान देव, 117. लोकनाथः – लोकों के स्वामी, 118. जगद्गुरुः – समस्त जगत के गुरु

श्लोक 16

त्र्यम्बको देवदेवेशः सर्वलोकमहेश्वरः ।
हरः शम्भुः शंकरश्च शिवः शर्वः सदाशिवः ॥

119. त्र्यम्बकः – तीन नेत्रों वाले, 120. देवदेवेशः – देवों के ईश्वर, 121. सर्वलोकमहेश्वरः – सभी लोकों के महेश्वर, 122. हरः – पाप एवं दुःख हरने वाले, 123. शम्भुः – कल्याणदाता, 124. शंकरः – कल्याण करने वाले, 125. शिवः – मंगलस्वरूप, 126. शर्वः – संहारकर्ता, 127. सदाशिवः – नित्य कल्याणस्वरूप

श्लोक 17

विश्वात्मा विश्वभर्ता च विश्वकर्ता विश्वरूपधृत् ।
विश्वेशो विश्वनाथश्च विश्वाधारो जगत्पतिः ॥

128. विश्वात्मा – समस्त विश्व की आत्मा, 129. विश्वभर्ता – विश्व का पालनकर्ता, 130. विश्वकर्ता – सृष्टि के कर्ता, 131. विश्वरूपधृत् – विश्वरूप धारण करने वाले, 132. विश्वेशः – विश्व के ईश्वर, 133. विश्वनाथः – विश्व के स्वामी, 134. विश्वाधारः – विश्व का आधार, 135. जगत्पतिः – जगत के स्वामी



श्लोक 18

अजः अनादिः अनन्तश्च अव्यक्तो व्यक्तरूपधृत् ।
नित्यः शुद्धः बुद्धरूपो मुक्तिदः मोक्षदायकः ॥

136.अजः – जन्मरहित, 137. अनादिः – जिनका कोई आदि नहीं, 138. अनन्तः – अनंत स्वरूप, 139. अव्यक्तः – अप्रकट, 140. व्यक्तरूपधृत् – प्रकट रूप धारण करने वाले, 141. नित्यः – सदा रहने वाले, 142. शुद्धः – पवित्र, 143. बुद्धरूपः – ज्ञानस्वरूप, 144. मुक्तिदः – मुक्ति देने वाले, 145. मोक्षदायकः – मोक्ष प्रदान करने वाले

श्लोक 19

ईशानः सर्वविद्यानाम् ईश्वरः सर्वभूतानाम् ।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवः ॥

146.ईशानः – समस्त विद्याओं के स्वामी, 147. ईश्वरः – सभी प्राणियों के ईश्वर, 148. ब्रह्माधिपतिः – ब्रह्मा के अधिपति, 149. ब्रह्मणोऽधिपतिः – वेद/ब्रह्म के स्वामी, 150. ब्रह्मा – सृष्टिकर्ता स्वरूप, 151. शिवः – कल्याणमय, 152. सदाशिवः – नित्य मंगलस्वरूप

श्लोक 20

नीलकण्ठः त्रिनेत्रश्च उमाकान्तः महेश्वरः ।
गंगाधरः कृपानिधिः भक्तानुग्रहकारकः ॥

153.नीलकण्ठः – नीले कंठ वाले, 154. त्रिनेत्रः – तीन नेत्रों वाले, 155. उमाकान्तः – उमा के प्रिय, 156. महेश्वरः – महान ईश्वर, 157. गंगाधरः – गंगा को धारण करने वाले, 158. कृपानिधिः – करुणा के भंडार, 159. भक्तानुग्रहकारकः – भक्तों पर अनुग्रह करने वाले



श्लोक 21

भूताधिपो भूतपतिर्भूतात्मा भूतभावनः ।
रुद्रः पशुपतिः शर्वः स्थाणुः त्रिलोचनः ॥

160.भूताधिपः – प्राणियों के अधिपति, 161. भूतपतिः – जीवों के स्वामी, 162. भूतात्मा – सबमें स्थित आत्मा, 163. भूतभावनः – सबका पालनकर्ता, 164. रुद्रः – दुःख नाशक, 165. पशुपतिः – जीवों के स्वामी, 166. शर्वः – संहारकर्ता, 167. स्थाणुः – अचल, 168. त्रिलोचनः – तीन नेत्रों वाले

श्लोक 22

महाकालः कालभैरवः कालात्मा कालभैरवः ।
कालयोगी महातेजाः कालेशः कालनायकः ॥

169.महाकालः – समय के भी स्वामी, 170. कालभैरवः – कालरूप भैरव, 171. कालात्मा – स्वयं कालस्वरूप, 172. कालभैरवः – प्रचंड कालरूप, 173. कालयोगी – काल में स्थित योगी, 174. महातेजाः – महान तेजस्वी, 175. कालेशः – काल के ईश्वर, 176. कालनायकः – समय के नियंत्रक

श्लोक 23

दिगम्बरः अष्टमूर्तिः अनघः परमेश्वरः ।
त्रिपुरारिः महेशानो गिरिजापतिः शूलधृत् ॥

177.दिगम्बरः – आकाश वस्त्र धारण करने वाले, 178. अष्टमूर्तिः – आठ रूपों वाले, 179. अनघः – निष्पाप, 180. परमेश्वरः – सर्वोच्च ईश्वर, 181. त्रिपुरारिः – त्रिपुरासुर के शत्रु, 182. महेशानः – महान ईश्वर, 183. गिरिजापतिः – गिरिजा (पार्वती) के पति, 184. शूलधृत् – त्रिशूल धारण करने वाले



श्लोक 24

भवः शर्वः रुद्रः पशुपतिः उग्रः महादेवः ।
भीमः ईश्वरः शम्भुः शिवः शंकरः ॥

185.भवः – सृष्टि के कारण, 186. शर्वः – संहारकर्ता, 187. रुद्रः – दुःख हरने वाले, 188. पशुपतिः – जीवों के स्वामी, 189. उग्रः – प्रचंड, 190. महादेवः – महान देव, 191. भीमः – भयानक रूप, 192. ईश्वरः – सर्वाधिपति, 193. शम्भुः – कल्याणदाता, 194. शिवः – मंगलस्वरूप, 195. शंकरः – कल्याण करने वाले

श्लोक 25

अचिन्त्यः अव्यक्तरूपः शाश्वतः शान्तः सनातनः ।
अनादिमध्यान्तहीनः परब्रह्म परमात्मा ॥

196.अचिन्त्यः – जिनका चिंतन कठिन, 197. अव्यक्तरूपः – अप्रकट स्वरूप, 198. शाश्वतः – सदैव रहने वाले, 199. शान्तः – शांति स्वरूप, 200. सनातनः – आदि-अनादि, 201. अनादिमध्यान्तहीनः – जिनका आदि, मध्य, अंत नहीं, 202. परब्रह्म – सर्वोच्च ब्रह्म, 203. परमात्मा – परम आत्मा

श्लोक 26

नटराजः नटराजेश्वरः नटराजाधिपतिः नटेश्वरः ।
नटराजसिंहः नटराजभद्रः नटराजकान्तिः नटराजप्रभुः ॥

204.नटराजः – नृत्य के स्वामी, 205. नटराजेश्वरः – नटराज के ईश्वर, 206. नटराजाधिपतिः – नटराज के अधिपति, 207. नटेश्वरः – नटों के स्वामी, 208. नटराजसिंहः – नटराज रूपी सिंह, 209. नटराजभद्रः – शुभकारी नटराज, 210. नटराजकान्तिः – नटराज का प्रकाश, 211. नटराजप्रभुः – नटराज का प्रभुत्व



श्लोक 27

भूतनाथः भूतनाथेश्वरः भूतनाथपतिः भूतनाथेश्वरः ।
भूतनाथरूपः भूतनाथात्मा भूतनाथपराक्रमः भूतनाथशिवः ॥

212. भूतनाथः – सभी जीवों के स्वामी, 213. भूतनाथेश्वरः – भूतनाथ के ईश्वर, 214. भूतनाथपतिः – भूतनाथ के पति, 215. भूतनाथेश्वरः – जीवों के स्वामी (ईश्वर रूप), 216. भूतनाथरूपः – भूतनाथ स्वरूप, 217. भूतनाथात्मा – भूतनाथ का आत्मा, 218. भूतनाथपराक्रमः – वीर भूतनाथ, 219. भूतनाथशिवः – भूतनाथ शिव स्वरूप

श्लोक 28

वृषभवाहनः वृषभध्वजः वृषभारूढः वृषभेश्वरः ।
वृषभपतिर्भैरवः वृषभनाथः वृषभरूपः वृषभप्रभुः ॥

220. वृषभवाहनः – वृषभ (बैल) पर सवार, 221. वृषभध्वजः – बैल ध्वजधारी, 222. वृषभारूढः – बैल पर आरोहण, 223. वृषभेश्वरः – बैल के स्वामी, 224. वृषभपतिर्भैरवः – भैरव रूपी बैलपति, 225. वृषभनाथः – बैलनाथ, 226. वृषभरूपः – बैल रूप वाले, 227. वृषभप्रभुः – बैल के प्रभु

श्लोक 29

त्रैलोक्यनाथः त्रैलोक्येश्वरः त्रैलोक्याधिपतिः त्रैलोक्यशिवः ।
त्रैलोक्यभैरवः त्रैलोक्यनाथात्मा त्रैलोक्यपराक्रमः त्रैलोक्यप्रभुः ॥

228. त्रैलोक्यनाथः – तीनों लोकों के स्वामी, 229. त्रैलोक्येश्वरः – त्रैलोक्य ईश्वर, 230. त्रैलोक्याधिपतिः – त्रैलोक्य का अधिपति, 231. त्रैलोक्यशिवः – त्रैलोक्य शिव, 232. त्रैलोक्यभैरवः – त्रैलोक्य भैरव, 233. त्रैलोक्यनाथात्मा – त्रैलोक्य स्वामी का आत्मा, 234. त्रैलोक्यपराक्रमः – वीर त्रैलोक्य स्वामी, 235. त्रैलोक्यप्रभुः – त्रैलोक्य के प्रभु



श्लोक 30

महाशिवः महेश्वरः विश्वनाथः विश्वेश्वरः विश्वेश्वरनाथः ।
महादेवः शिवेश्वरः शिवानन्दः शिवशंकरः शिवाभयः ॥

236. महाशिवः – महान शिव, 237. महेश्वरः – महान ईश्वर,
238. विश्वनाथः – सम्पूर्ण जगत के स्वामी, 239. विश्वेश्वरः –
विश्व का ईश्वर, 240. विश्वेश्वरनाथः – विश्वेश्वर का स्वामी, 241.
महादेवः – महान देव, 242. शिवेश्वरः – शिव ईश्वर, 243.
शिवानन्दः – शिव का आनंद, 244. शिवशंकरः – कल्याणकारी
शिव, 245. शिवाभयः – भय हरने वाले शिव

श्लोक 31

सच्चिदानन्दः सत्त्विकः सदाशिवः शिवोऽहम्
शिवात्मा शिवभूतः शिवभक्तः शिवप्रभुः ॥

246. सच्चिदानन्दः – सत्य, चेतना और आनंद रूप, 247.
सत्त्विकः – सत्त्व गुण वाले, 248. सदाशिवः – सदैव शिव
स्वरूप, 249. शिवोऽहम् – “मैं शिव हूँ”, 250. शिवात्मा – शिव
का आत्मा, 251. शिवभूतः – शिव सभी प्राणियों में व्याप्त,
252. शिवभक्तः – शिव का भक्त, 253. शिवप्रभुः – शिव का प्रभु

श्लोक 32

अर्द्धनारीश्वरः अघोरः अन्नपूर्णः वृषभवाहनः
त्रैलोक्यनाथः महाशिवः विश्वनाथः च ॥

254. अर्द्धनारीश्वरः – पार्वती के साथ ईश्वर, 255. अघोरः –
भयकारी रूप वाले, 256. अन्नपूर्णः – अन्न देने वाले, 257.
वृषभवाहनः – बैल पर सवार, 258. त्रैलोक्यनाथः – तीनों लोकों
के स्वामी, 259. महाशिवः – महान शिव, 260. विश्वनाथः –
सम्पूर्ण जगत के स्वामी



श्लोक 33

सच्चिदानन्दः सत्त्विकः सदाशिवः शिवोऽहम्
शिवात्मा शिवभूतः शिवभक्तः शिवप्रभुः ॥

261.सच्चिदानन्दः – सत्य, चेतना और आनंद रूप, 262.
सत्त्विकः – सत्व गुण वाले, 263. सदाशिवः – सदैव शिव
स्वरूप, 264. शिवोऽहम् – “मैं शिव हूँ”, 265. शिवात्मा – शिव
का आत्मा, 266. शिवभूतः – शिव सभी प्राणियों में व्याप्त,
267. शिवभक्तः – शिव का भक्त, 268. शिवप्रभुः – शिव का प्रभु

श्लोक 34

महादेवः भूतनाथः भूतनाथेश्वरः भूतनाथपतिः
भूतनाथपराक्रमः भूतनाथशिवः भूतनाथनाथः भूतनाथभद्रः ॥

269.महादेवः – महान देव, 270. भूतनाथः – सभी जीवों के
स्वामी, 271. भूतनाथेश्वरः – भूतनाथ के ईश्वर, 272.
भूतनाथपतिः – भूतनाथ के पति, 273. भूतनाथपराक्रमः – वीर
भूतनाथ, 274. भूतनाथशिवः – भूतनाथ शिव स्वरूप, 275.
भूतनाथनाथः – भूतनाथ का स्वामी, 276. भूतनाथभद्रः –
शुभकारी भूतनाथ

श्लोक 35

वृषभध्वजः वृषभारूढः वृषभेश्वरः वृषभपतिर्भैरवः
वृषभनाथः वृषभरूपः वृषभप्रभुः वृषभभद्रः ॥

277.वृषभध्वजः – बैल ध्वजधारी, 278. वृषभारूढः – बैल पर
आरोहण, 279. वृषभेश्वरः – बैल के स्वामी, 280.
वृषभपतिर्भैरवः – भैरव रूपी बैलपति, 281. वृषभनाथः –
बैलनाथ, 282. वृषभरूपः – बैल रूप वाले, 283. वृषभप्रभुः –
बैल के प्रभु, 284. वृषभभद्रः – शुभकारी बैलस्वामी



श्लोक 36

त्रिनेत्रः त्रिलोकेश्वरः त्रिलोकनाथः त्रिपुरान्तकः
त्रिपुरध्वजः त्रिपुरेश्वरः त्रिपुरभैरवः त्रिपुरनाथः ॥

285. त्रिनेत्रः – तीन आंखों वाले, 286. त्रिलोकेश्वरः – तीनों लोकों के ईश्वर, 287. त्रिलोकनाथः – तीनों लोकों के स्वामी, 288. त्रिपुरान्तकः – त्रिपुरासुर का संहारक, 289. त्रिपुरध्वजः – त्रिपुरासुर के ध्वज वाले, 290. त्रिपुरेश्वरः – त्रिपुरासुर के ईश्वर, 291. त्रिपुरभैरवः – त्रिपुरासुर का भैरव रूप, 292. त्रिपुरनाथः – त्रिपुरासुर के स्वामी

श्लोक 37

महाकालः कालभैरवः कालायनः कालेश्वरः
कालनाथः कालराजः कालेश्वरपतिः कालभद्रः ॥

293. महाकालः – समय का अधिपति, 294. कालभैरवः – भयकारी समय के देवता, 295. कालायनः – समय की ओर अग्रसर, 296. कालेश्वरः – समय के ईश्वर, 297. कालनाथः – समय का स्वामी, 298. कालराजः – समय का राजा, 299. कालेश्वरपतिः – समय के प्रभु, 300. कालभद्रः – शुभकारी समय

श्लोक 38

भस्माङ्कितः भस्मधारी भस्माभूषितः भस्मभूषितः
भस्मस्नेही भस्मरूपः भस्मनाथः भस्मभद्रः ॥

301. भस्माङ्कितः – भस्म से चिन्हित, 302. भस्मधारी – भस्म धारण करने वाले, 303. भस्माभूषितः – भस्म से सुसज्जित, 304. भस्मभूषितः – भस्म से अलंकृत, 305. भस्मस्नेही – भस्म प्रिय, 306. भस्मरूपः – भस्म रूप वाले, 307. भस्मनाथः – भस्म के स्वामी, 308. भस्मभद्रः – शुभकारी भस्मधारी



श्लोक 39

नागभूषितः नागेश्वरः नागनाथः नागराजः
नागभैरवः नागपतिः नागरूपः नागप्रभुः नागभद्रः ॥

309.नागभूषितः –नाग से सज्जित, 310. नागेश्वरः –नागों के ईश्वर, 311. नागनाथः –नागों के स्वामी, 312. नागराजः –नागों का राजा, 313. नागभैरवः –नागों का भैरव रूप, 314. नागपतिः –नागों का प्रभु, 315. नागरूपः –नाग रूप वाले, 316. नागप्रभुः –नागों के स्वामी, 317. नागभद्रः –शुभकारी नाग

श्लोक 40

पिनाकधारी पिनाकेश्वरः पिनाकनाथः पिनाकभूषितः
पिनाकभैरवः पिनाकपतिः पिनाकरूपः पिनाकप्रभुः पिनाकभद्रः ॥

318.पिनाकधारी –पिनाक धनुषधारी, 319. पिनाकेश्वरः –पिनाक के ईश्वर, 320. पिनाकनाथः –पिनाक के स्वामी, 321. पिनाकभूषितः –पिनाक से सुसज्जित, 322. पिनाकभैरवः –पिनाक के भैरव रूप, 323. पिनाकपतिः –पिनाक के प्रभु, 324. पिनाकरूपः –पिनाक रूप वाले, 325. पिनाकप्रभुः –पिनाक के स्वामी, 326. पिनाकभद्रः –शुभकारी पिनाकधारी

श्लोक 41

योगी योगविदां नेता योगीश्वरः सनातनः
सर्वज्ञः सर्वकर्ता च सर्वलोकनमस्कृतः ॥

327.योगी –योग में निपुण, 328. योगविदां नेता –योग विद्वानों के गुरु, 329. योगीश्वरः –योग का ईश्वर, 330. सनातनः –शाश्वत, अनादि, 331. सर्वज्ञः –सर्वज्ञानी, 332. सर्वकर्ता –सभी कर्ताओं के अधिपति, 333. सर्वलोकनमस्कृतः –सबके द्वारा पूजनीय



श्लोक 42

महादेवो महात्मा च महायोगी महेश्वरः
महाबुद्धिर्महातेजा महाबलपराक्रमः ॥

334. महादेवो – महान देव, 335. महात्मा – महान आत्मा,
336. महायोगी – महान योगी, 337. महेश्वरः – महा ईश्वर,
338. महाबुद्धिः – महान बुद्धि वाले, 339. महातेजा – महान
तेजस्वी, 340. महाबलपराक्रमः – महान शक्ति और पराक्रम
वाले

श्लोक 43

त्र्यम्बकः त्रिलोचनः त्रिपुरान्तकः त्रिनेत्रधारी
सच्चिदानन्दः शुद्धात्मा सदाशिवः शिवार्चितः ॥

341. त्र्यम्बकः – तीन नेत्र वाले, 342. त्रिलोचनः – तीन आंखों
वाले, 343. त्रिपुरान्तकः – त्रिपुरासुर का संहारक, 344.
त्रिनेत्रधारी – तीन आंखों का धारी, 345. सच्चिदानन्दः – सत्य,
चेतना और आनंद रूप, 346. शुद्धात्मा – शुद्ध आत्मा, 347.
सदाशिवः – सदैव शिव स्वरूप, 348. शिवार्चितः – शिव की
पूजा योग्य

श्लोक 44

भुवननाथः भुवनेश्वरः भुवनपतिर्भुवनेश्वरः
भुवनभद्रः भुवनभानुः भुवनप्रभुः भुवनराजः ॥

349. भुवननाथः – भुवनों के स्वामी, 350. भुवनेश्वरः – भुवनों के
ईश्वर, 351. भुवनपति – भुवनों के प्रभु, 352. भुवनेश्वरः –
भुवनों के अधिपति, 353. भुवनभद्रः – शुभकारी भुवनपति,
354. भुवनभानुः – भुवनों में प्रकाशित, 355. भुवनप्रभुः –
भुवनों के प्रभु, 356. भुवनराजः – भुवनों का राजा



श्लोक 45

नित्यानन्दः नित्यानिधिः नित्यशिवः नित्यभद्रः
नित्ययोगी नित्यात्मा नित्यप्रभुः नित्यशक्तिः ॥

357.नित्यानन्दः – सदैव आनंदित, 358. नित्यानिधिः – अनंत खजाना, 359. नित्यशिवः – सदैव शिव रूप, 360. नित्यभद्रः – सदैव शुभ, 361. नित्ययोगी – सदैव योगी, 362. नित्यात्मा – अनंत आत्मा, 363. नित्यप्रभुः – अनंत प्रभु, 364. नित्यशक्तिः – अनंत शक्ति

श्लोक 46

अर्धनारीश्वरः अघोरः अन्नपूर्णः वृषभवाहनः
त्रैलोक्यनाथः महाशिवः विश्वनाथः शिवोऽहम् ॥

365.अर्धनारीश्वरः – पार्वती के साथ ईश्वर, 366. अघोरः – भयकारी रूप वाले, 367. अन्नपूर्णः – अन्न देने वाले, 368. वृषभवाहनः – बैल पर सवार, 369. त्रैलोक्यनाथः – तीनों लोकों के स्वामी, 370. महाशिवः – महान शिव, 371. विश्वनाथः – सम्पूर्ण जगत के स्वामी, 372. शिवोऽहम् – “मैं शिव हूँ”

श्लोक 47

सच्चिदानन्दः सत्त्विकः सदाशिवः शंकरः
भूतनाथः भूतपतिर्भूतभैरवः भैरवः ॥

373.सच्चिदानन्दः – सत्य, चेतना और आनंद रूप, 374. सत्त्विकः – सत्त्व गुण वाले, 375. सदाशिवः – सदैव शिव स्वरूप, 376. शंकरः – शुभ देने वाले, 377. भूतनाथः – जीवों के स्वामी, 378. भूतपति – भूतों के अधिपति, 379. भूतभैरवः – भूतों का भयकारी स्वामी, 380. भैरवः – भयभीत करने वाले



श्लोक 48

महाकालः कालभैरवः कालोत्राहः कालाग्निः
महाकपालेश्वरः महादारिद्र्यहरः महेश्वरः ॥

381.महाकालः – समय के स्वामी, 382. कालभैरवः – समय और मृत्यु के अधिपति, 383. कालोत्राहः – मृत्यु से भय न देने वाला, 384. कालाग्निः – समय की अग्नि रूपी शक्ति, 385. महाकपालेश्वरः – खोपड़ीधारी महा ईश्वर, 386. महादारिद्र्यहरः – गरीबी दूर करने वाले, 387. महेश्वरः – महान ईश्वर

श्लोक 49

नागेश्वरः नागधारी नागराजः नागभवः
नागविनायकः नागपत्निः नागनायकः नागनाथः ॥

388.नागेश्वरः – नागों के स्वामी, 389. नागधारी – नागधारी, 390. नागराजः – नागों के राजा, 391. नागभवः – नागों का जन्मदाता, 392. नागविनायकः – नागों के प्रमुख, 393. नागपत्निः – नागों की पत्नी के सम्मानित, 394. नागनायकः – नागों का नेता, 395. नागनाथः – नागों के अधिपति

श्लोक 50

सर्वशक्तिमान् सर्वभूतनाथः सर्वविद्याधरः
सर्वलोकप्रियः सर्वसिद्धिदायकः सर्वसंतुष्टः ॥

396.सर्वशक्तिमान् – सभी शक्तियों वाले, 397. सर्वभूतनाथः – सभी प्राणियों के स्वामी, 398. सर्वविद्याधरः – सभी विद्या के धारक, 399. सर्वलोकप्रियः – सभी लोकों में प्रिय, 400. सर्वसिद्धिदायकः – सभी सिद्धियों को देने वाले, 401. सर्वसंतुष्टः – सभी को संतुष्ट करने वाले



श्लोक 51

महादेवः महागणपतिः महाकपर्दिनः महाशक्तिः
महादारिद्र्यहरः महाज्ञानी महाकल्पेश्वरः ॥

402. महादेवः – महान ईश्वर, 403. महागणपतिः – गणपतियों के प्रमुख, 404. महाकपर्दिनः – बड़ी जटाओं वाले, 405. महाशक्तिः – सभी शक्तियों वाले, 406. महादारिद्र्यहरः – गरीबी दूर करने वाले, 407. महाज्ञानी – महान ज्ञानी, 408. महाकल्पेश्वरः – समय और कल्पों के स्वामी

श्लोक 52

त्रिनेत्रः त्रिनेत्रधारी त्रिपुरारी त्रिपुरभवः
त्रैलोक्यपालः त्रैलोक्यनायकः त्रैलोक्यसुतः त्रैलोक्यनिवासिन् ॥

409. त्रिनेत्रः – तीन नेत्रों वाले, 410. त्रिनेत्रधारी – त्रिनेत्रधारी, 411. त्रिपुरारी – त्रिपुरासुरों के विनाशक, 412. त्रिपुरभवः – त्रिपुर में निवास करने वाले, 413. त्रैलोक्यपालः – तीनों लोकों के पालक, 414. त्रैलोक्यनायकः – तीनों लोकों के नायक, 415. त्रैलोक्यसुतः – तीनों लोकों का पुत्र, 416. त्रैलोक्यनिवासिन् – तीनों लोकों में निवास करने वाले

श्लोक 53

भूतनाथः भूतपतिर्भूतसखा भूतभवः
भूतसिद्धिदायकः भूतभैरवः भूतनाथः भूतात्मजः ॥

417. भूतनाथः – जीवों के स्वामी, 418. भूतपति – भूतों के अधिपति, 419. भूतसखा – भूतों के मित्र, 420. भूतभवः – भूतों का जन्मदाता, 421. भूतसिद्धिदायकः – भूतों को सिद्धि देने वाले, 422. भूतभैरवः – भूतों का भयकारी स्वामी, 423. भूतनाथः – सभी भूतों का स्वामी, 424. भूतात्मजः – भूतों का पुत्र



श्लोक 54

महाकालः कालभैरवः कालोत्राहः कालाग्निः
कालविष्णुः कालेश्वरः कालशिवः कालभूतनाथः ॥

425.महाकालः – समय के स्वामी, 426. कालभैरवः – समय और मृत्यु के अधिपति, 427. कालोत्राहः – मृत्यु से भय न देने वाला, 428. कालाग्निः – समय की अग्नि रूपी शक्ति, 429. कालविष्णुः – समय के विष्णु रूप वाले, 430. कालेश्वरः – काल के स्वामी, 431. कालशिवः – काल में शिव रूप, 432. कालभूतनाथः – काल में भूतों के स्वामी

श्लोक 55

सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञः सर्वसिद्धिदायकः
सर्वभूतनाथः सर्वसंतुष्टः सर्वलोकप्रियः सर्वशरणम् ॥

433.सर्वशक्तिमान् – सभी शक्तियों वाले, 434. सर्वज्ञः – सभी जानों वाले, 435. सर्वसिद्धिदायकः – सभी सिद्धियां देने वाले, 436. सर्वभूतनाथः – सभी प्राणियों के स्वामी, 437. सर्वसंतुष्टः – सभी को संतुष्ट करने वाले, 438. सर्वलोकप्रियः – सभी लोकों में प्रिय, 439. सर्वशरणम् – सभी के लिए शरण

श्लोक 56

विघ्नेश्वरः विनायकः विघ्नहरः विघ्ननायकः
विघ्ननाथः विघ्नसुखप्रदः विघ्नभंजकः विघ्नमोचनः ॥

440.विघ्नेश्वरः – विघ्नों के स्वामी, 441. विनायकः – बाधाओं को दूर करने वाले, 442. विघ्नहरः – सभी विघ्नों को हरने वाले, 443. विघ्ननायकः – विघ्नों के नायक, 444. विघ्ननाथः – विघ्नों के स्वामी, 445. विघ्नसुखप्रदः – सुख देने वाले, 446. विघ्नभंजकः – बाधाएं तोड़ने वाले, 447. विघ्नमोचनः – विघ्नों से मुक्त करने वाले



श्लोक 57

महाशक्तिमान् महायोगी महादेवः
महाबलप्रदः महाब्रह्मन् महात्मा महेश्वरः ॥

448. महाशक्तिमान् – महान शक्ति वाले, 449. महायोगी – योग के महान ज्ञानी, 450. महादेवः – महान ईश्वर, 451. महाबलप्रदः – महान बल देने वाले, 452. महाब्रह्मन् – ब्रह्मा रूपी महाशक्ति, 453. महात्मा – महान आत्मा वाले, 454. महेश्वरः – महान स्वामी

श्लोक 58

पिनाकधारी पिनाकनाथः पिनाकशेखरः पिनाकप्रभुः
पिनाकसर्वेश्वरः पिनाकभूषणः पिनाकसंपत् पिनाकसुखप्रदः ॥

455. पिनाकधारी – पिनाक (त्रिशूल) धारण करने वाले, 456. पिनाकनाथः – पिनाक के स्वामी, 457. पिनाकशेखरः – पिनाक के माथे वाले, 458. पिनाकप्रभुः – पिनाक के प्रभु, 459. पिनाकसर्वेश्वरः – पिनाक के सभी स्वामी, 460. पिनाकभूषणः – पिनाक का आभूषण, 461. पिनाकसंपत् – पिनाक की संपत्ति देने वाले, 462. पिनाकसुखप्रदः – पिनाक द्वारा सुख देने वाले

श्लोक 59

त्रिशूलधारी त्रिशूलनाथः त्रिशूलभूषणः
त्रिशूलसंपत् त्रिशूलशेखरः त्रिशूलप्रभुः त्रिशूलमोचनः ॥

463. त्रिशूलधारी – त्रिशूल धारण करने वाले, 464. त्रिशूलनाथः – त्रिशूल के स्वामी, 465. त्रिशूलभूषणः – त्रिशूल का आभूषण, 466. त्रिशूलसंपत् – त्रिशूल की संपत्ति देने वाले, 467. त्रिशूलशेखरः – त्रिशूल माथे पर धारण करने वाले, 468. त्रिशूलप्रभुः – त्रिशूल के प्रभु, 469. त्रिशूलमोचनः – त्रिशूल से संकट मोचन



श्लोक 60

गंगाधरः गंगाधारी गंगाप्रभुः
गंगाप्रवर्तकः गंगासुधाकरः गंगासम्पत् गंगामयूखः गंगानिधिः ॥

470. गंगाधरः – गंगा धारण करने वाले, 471. गंगाधारी – गंगा के धारक, 472. गंगाप्रभुः – गंगा के प्रभु, 473. गंगाप्रवर्तकः – गंगा प्रवर्तक, 474. गंगासुधाकरः – गंगा के सुधा देने वाले, 475. गंगासंपत् – गंगा की संपत्ति देने वाले, 476. गंगामयूखः – गंगा की किरण रूपी शक्ति वाले, 477. गंगानिधिः – गंगा का खजाना

श्लोक 61

कामेश्वरः कामरूपः कामदीपकः
कामसुधाकरः कामप्रदः काममोचनः ॥

478. कामेश्वरः – इच्छाओं के स्वामी, 479. कामरूपः – काम के रूप वाले, 480. कामदीपकः – इच्छाओं का दीपक, 481. कामसुधाकरः – इच्छाओं का निर्माता, 482. कामप्रदः – इच्छाओं को पूरा करने वाले, 483. काममोचनः – कामों से मुक्त करने वाले

श्लोक 62

भस्मधारी भस्मभूषणः भस्मनाथः
भस्ममोचनः भस्मसंपत् भस्मप्रभुः भस्मसिद्धिः ॥

484. भस्मधारी – भस्म धारण करने वाले, 485. भस्मभूषणः – भस्म का आभूषण, 486. भस्मनाथः – भस्म के स्वामी, 487. भस्ममोचनः – भस्म से मोक्ष देने वाले, 488. भस्मसंपत् – भस्म से संपत्ति देने वाले, 489. भस्मप्रभुः – भस्म के प्रभु, 490. भस्मसिद्धिः – भस्म से सिद्धि देने वाले



श्लोक 63

रुद्रः रुद्रनाथः रुद्रेश्वरः रुद्रमोचनः
रुद्रसिद्धिः रुद्रभूषणः रुद्रप्रभुः रुद्रसंपत् ॥

491.रुद्रः – क्रोधित शिव रूप, 492. रुद्रनाथः – रुद्र के स्वामी,
493. रुद्रेश्वरः – रुद्र ईश्वर, 494. रुद्रमोचनः – रुद्र से मोक्ष देने
वाले, 495. रुद्रसिद्धिः – रुद्र से सिद्धि देने वाले, 496. रुद्रभूषणः
– रुद्र का आभूषण, 497. रुद्रप्रभुः – रुद्र के प्रभु, 498. रुद्रसंपत्
– रुद्र की संपत्ति देने वाले

श्लोक 64

नागधारी नागनाथः नागमोचनः नागभूषणः
नागसंपत् नागप्रभुः नागसुखप्रदः नागसिद्धिः ॥

499.नागधारी – नाग धारण करने वाले, 500. नागनाथः –
नागों के स्वामी, 501. नागमोचनः – नागों से मोक्ष देने वाले,
502. नागभूषणः – नाग का आभूषण, 503. नागसंपत् – नागों
से संपत्ति देने वाले, 504. नागप्रभुः – नागों के प्रभु, 505.
नागसुखप्रदः – नागों से सुख देने वाले, 506. नागसिद्धिः – नागों
से सिद्धि देने वाले

श्लोक 65

शंखधारी शंखनाथः शंखप्रभुः शंखसंपत्
शंखमोचनः शंखभूषणः शंखसिद्धिः शंखसुखप्रदः ॥

507.शंखधारी – शंख धारण करने वाले, 508. शंखनाथः – शंख
के स्वामी, 509. शंखप्रभुः – शंख के प्रभु, 510. शंखसंपत् –
शंख से संपत्ति देने वाले, 511. शंखमोचनः – शंख से मोक्ष देने
वाले, 512. शंखभूषणः – शंख का आभूषण, 513. शंखसिद्धिः –
शंख से सिद्धि देने वाले, 514. शंखसुखप्रदः – शंख से सुख देने
वाले



श्लोक 66

कालभैरवः कालनाथः कालप्रभुः कालसंपत्
कालमोचनः कालभूषणः कालसिद्धिः कालसुखप्रदः ॥

515.कालभैरवः – भैरव रूपी समय के स्वामी, 516. कालनाथः – समय के स्वामी, 517. कालप्रभुः – समय का प्रभु, 518. कालसंपत् – समय से संपत्ति देने वाले, 519. कालमोचनः – समय से मोक्ष देने वाले, 520. कालभूषणः – समय का आभूषण, 521. कालसिद्धिः – समय से सिद्धि देने वाले, 522. कालसुखप्रदः – समय से सुख देने वाले

श्लोक 67

महाकालः महेश्वरः महाधीश्वरः महाभूषणः
महासंपत् महाप्रभुः महमोचनः महासिद्धिः ॥

523.महाकालः – समय के महान स्वामी, 524. महेश्वरः – महान ईश्वर, 525. महाधीश्वरः – सभी पर उच्चतम स्वामी, 526. महाभूषणः – महान आभूषण वाले, 527. महासंपत् – महान संपत्ति देने वाले, 528. महाप्रभुः – महान प्रभु, 529. महमोचनः – महान मोक्ष देने वाले, 530. महासिद्धिः – महान सिद्धि देने वाले

श्लोक 68

त्रिपुरान्तकः त्रैलोक्यनायकः त्रिभुवननाथः
त्रिपुरमोचनः त्रिभूषणः त्रिलोकप्रभुः त्रिलोकसंपत् ॥

531.त्रिपुरान्तकः – त्रिपुरासुर का नाश करने वाले, 532. त्रैलोक्यनायकः – तीनों लोकों के स्वामी, 533. त्रिभूवननाथः – तीनों लोकों के स्वामी, 534. त्रिपुरमोचनः – त्रिपुरासुर से मुक्ति देने वाले, 535. त्रिभूषणः – तीनों लोकों का आभूषण, 536. त्रिलोकप्रभुः – तीनों लोकों के प्रभु, 537. त्रिलोकसंपत् – तीनों लोकों से संपत्ति देने वाले



श्लोक 69

सर्वेश्वरः सर्वनाथः सर्वप्रभुः सर्वसंपत्
सर्वमोचनः सर्वभूषणः सर्वसिद्धिः सर्वसुखप्रदः ॥

538.सर्वेश्वरः – सभी के ईश्वर, 539. सर्वनाथः – सभी के स्वामी, 540. सर्वप्रभुः – सभी का प्रभु, 541. सर्वसंपत् – सभी को संपत्ति देने वाले, 542. सर्वमोचनः – सभी को मोक्ष देने वाले, 543. सर्वभूषणः – सभी का आभूषण, 544. सर्वसिद्धिः – सभी को सिद्धि देने वाले, 545. सर्वसुखप्रदः – सभी को सुख देने वाले

श्लोक 70

जगन्नाथः जगदीश्वरः जगप्रभुः जगमोचनः
जगसंपत् जगभूषणः जगसिद्धिः जगसुखप्रदः ॥

546.जगन्नाथः – जगत के स्वामी, 547. जगदीश्वरः – जगत के ईश्वर, 548. जगप्रभुः – जगत के प्रभु, 549. जगमोचनः – जगत को मोक्ष देने वाले, 550. जगसंपत् – जगत से संपत्ति देने वाले, 551. जगभूषणः – जगत का आभूषण, 552. जगसिद्धिः – जगत को सिद्धि देने वाले, 553. जगसुखप्रदः – जगत को सुख देने वाले

श्लोक 71

सत्यनाथः सत्यप्रभुः सत्यसंपत् सत्यमोचनः
सत्यभूषणः सत्यसिद्धिः सत्यसुखप्रदः सत्यमूर्तिः ॥

554.भस्मप्रियः – भस्म प्रिय रखने वाले, 555. भस्मशायी – भस्म में शयन करने वाले, 556. भस्मोद्धूलितविग्रहः – भस्म से विभूषित, 557. भूतनाथः – प्राणियों के स्वामी, 558. महादेवः – महान देव, 559. लोकनाथः – लोकों के स्वामी, 560. जगद्गुरुः – समस्त जगत के गुरु



श्लोक 72

आनन्दनाथः आनन्दप्रभुः आनन्दसंपत् आनन्दमोचनः
आनन्दभूषणः आनन्दसिद्धिः आनन्दसुखप्रदः आनन्दमूर्तिः ॥

561. आनन्दनाथः – आनन्द के स्वामी, 562. आनन्दप्रभुः –
आनन्द का प्रभु, 563. आनन्दसंपत् – आनन्द से संपत्ति देने वाले,
564. आनन्दमोचनः – आनन्द से मोक्ष देने वाले, 565.
आनन्दभूषणः – आनन्द का आभूषण, 566. आनन्दसिद्धिः – आनन्द
से सिद्धि देने वाले, 567. आनन्दसुखप्रदः – आनन्द से सुख देने
वाले, 568. आनन्दमूर्तिः – आनन्द रूप

श्लोक 73

ध्याननाथः ध्यानप्रभुः ध्यानसंपत् ध्यानमोचनः
ध्यानभूषणः ध्यानसिद्धिः ध्यानसुखप्रदः ध्यानमूर्तिः ॥

569. ध्याननाथः – ध्यान के स्वामी, 570. ध्यानप्रभुः – ध्यान
का प्रभु, 571. ध्यानसंपत् – ध्यान से संपत्ति देने वाले, 572.
ध्यानमोचनः – ध्यान से मोक्ष देने वाले, 573. ध्यानभूषणः –
ध्यान का आभूषण, 574. ध्यानसिद्धिः – ध्यान से सिद्धि देने
वाले, 575. ध्यानसुखप्रदः – ध्यान से सुख देने वाले, 576.
ध्यानमूर्तिः – ध्यान रूप

श्लोक 74

शिवनाथः शिवप्रभुः शिवसंपत् शिवमोचनः
शिवभूषणः शिवसिद्धिः शिवसुखप्रदः शिवमूर्तिः ॥

577. शिवनाथः – शिव के स्वामी, 578. शिवप्रभुः – शिव का
प्रभु, 579. शिवसंपत् – शिव से संपत्ति देने वाले, 580.
शिवमोचनः – शिव से मोक्ष देने वाले, 581. शिवभूषणः – शिव
का आभूषण, 582. शिवसिद्धिः – शिव से सिद्धि देने वाले, 583.
शिवसुखप्रदः – शिव से सुख देने वाले, 584. शिवमूर्तिः – शिव
रूप



श्लोक 75

भैरवनाथः भैरवप्रभुः भैरवसंपत् भैरवमोचनः
भैरवभूषणः भैरवसिद्धिः भैरवसुखप्रदः भैरवमूर्तिः ॥

585. भैरवनाथः – भैरव के स्वामी, 586. भैरवप्रभुः – भैरव का प्रभु, 587. भैरवसंपत् – भैरव से संपत्ति देने वाले, 588. भैरवमोचनः – भैरव से मोक्ष देने वाले, 589. भैरवभूषणः – भैरव का आभूषण, 590. भैरवसिद्धिः – भैरव से सिद्धि देने वाले, 591. भैरवसुखप्रदः – भैरव से सुख देने वाले, 592. भैरवमूर्तिः – भैरव रूप

श्लोक 76

कालनाथः कालप्रभुः कालसंपत् कालमोचनः
कालभूषणः कालसिद्धिः कालसुखप्रदः कालमूर्तिः ॥

593. कालनाथः – समय के स्वामी, 594. कालप्रभुः – समय का प्रभु, 595. कालसंपत् – समय से संपत्ति देने वाले, 596. कालमोचनः – समय से मोक्ष देने वाले, 597. कालभूषणः – समय का आभूषण, 598. कालसिद्धिः – समय से सिद्धि देने वाले, 599. कालसुखप्रदः – समय से सुख देने वाले, 600. कालमूर्तिः – समय रूप

श्लोक 77

महेश्वरनाथः महेश्वरप्रभुः महेश्वरसंपत् महेश्वरमोचनः
महेश्वरभूषणः महेश्वरसिद्धिः महेश्वरसुखप्रदः महेश्वरमूर्तिः ॥

601. महेश्वरनाथः – महेश्वर के स्वामी, 602. महेश्वरप्रभुः – महेश्वर का प्रभु, 603. महेश्वरसंपत् – महेश्वर से संपत्ति देने वाले, 604. महेश्वरमोचनः – महेश्वर से मोक्ष देने वाले, 605. महेश्वरभूषणः – महेश्वर का आभूषण, 606. महेश्वरसिद्धिः – महेश्वर से सिद्धि देने वाले, 607. महेश्वरसुखप्रदः – महेश्वर से सुख देने वाले, 608. महेश्वरमूर्तिः – महेश्वर रूप



श्लोक 78

त्रिनेत्रनाथः त्रिनेत्रप्रभुः त्रिनेत्रसंपत् त्रिनेत्रमोचनः
त्रिनेत्रभूषणः त्रिनेत्रसिद्धिः त्रिनेत्रसुखप्रदः त्रिनेत्रमूर्तिः ॥

609. त्रिनेत्रनाथः - तीन नेत्रों के स्वामी, 610. त्रिनेत्रप्रभुः - तीन नेत्रों वाले प्रभु, 611. त्रिनेत्रसंपत् - तीन नेत्रों से संपत्ति देने वाले, 612. त्रिनेत्रमोचनः - तीन नेत्रों से मोक्ष देने वाले, 613. त्रिनेत्रभूषणः - तीन नेत्रों का आभूषण, 614. त्रिनेत्रसिद्धिः - तीन नेत्रों से सिद्धि देने वाले, 615. त्रिनेत्रसुखप्रदः - तीन नेत्रों से सुख देने वाले, 616. त्रिनेत्रमूर्तिः - तीन नेत्रों का रूप

श्लोक 79

शूलपाणिः शूलधारिणः शूलसंपत् शूलमोचनः
शूलभूषणः शूलसिद्धिः शूलसुखप्रदः शूलमूर्तिः ॥

617. शूलपाणिः - त्रिशूलधारी, 618. शूलधारिणः - शूल धारण करने वाले, 619. शूलसंपत् - शूल से संपत्ति देने वाले, 620. शूलमोचनः - शूल से मोक्ष देने वाले, 621. शूलभूषणः - शूल का आभूषण, 622. शूलसिद्धिः - शूल से सिद्धि देने वाले, 623. शूलसुखप्रदः - शूल से सुख देने वाले, 624. शूलमूर्तिः - शूल रूप

श्लोक 80

नीलकण्ठः नीलप्रभुः नीलसंपत् नीलमोचनः
नीलभूषणः नीलसिद्धिः नीलसुखप्रदः नीलमूर्तिः ॥

625. नीलकण्ठः - नीला कंठ वाला, 626. नीलप्रभुः - नीला प्रभु, 627. नीलसंपत् - नीला रंग से संपत्ति देने वाले, 628. नीलमोचनः - नीला रूप से मोक्ष देने वाले, 629. नीलभूषणः - नीला आभूषण, 630. नीलसिद्धिः - नीला रूप से सिद्धि देने वाले, 631. नीलसुखप्रदः - नीला रूप से सुख देने वाले, 632. नीलमूर्तिः - नीला रूप



श्लोक 81

वृषभध्वजः वृषभवाहनः वृषभसंपत् वृषभमोचनः
वृषभभूषणः वृषभसिद्धिः वृषभसुखप्रदः वृषभमूर्तिः ॥

633. वृषभध्वजः – वृषभधारी ध्वज वाले, 634. वृषभवाहनः –
वृषभ पर सवार, 635. वृषभसंपत् – वृषभ से संपत्ति देने वाले,
636. वृषभमोचनः – वृषभ से मोक्ष देने वाले, 637. वृषभभूषणः
– वृषभ का आभूषण, 638. वृषभसिद्धिः – वृषभ से सिद्धि देने
वाले, 639. वृषभसुखप्रदः – वृषभ से सुख देने वाले

श्लोक 82

त्रिपुरान्तकः त्रिपुरभंजनः त्रिपुरसंपत् त्रिपुरमोचनः
त्रिपुरभूषणः त्रिपुरसिद्धिः त्रिपुरसुखप्रदः त्रिपुरमूर्तिः ॥

640. त्रिपुरान्तकः – त्रिपुरों के अंत करने वाले, 641. त्रिपुरभंजनः
– त्रिपुर का भंजन करने वाले, 642. त्रिपुरसंपत् – त्रिपुर से
संपत्ति देने वाले, 643. त्रिपुरमोचनः – त्रिपुर से मोक्ष देने वाले,
644. त्रिपुरभूषणः – त्रिपुर का आभूषण, 645. त्रिपुरसिद्धिः –
त्रिपुर से सिद्धि देने वाले, 646. त्रिपुरसुखप्रदः – त्रिपुर से सुख
देने वाले, 647. त्रिपुरमूर्तिः – त्रिपुर रूप

श्लोक 83

कालभैरवः कालप्रभुः कालसंपत् कालमोचनः
कालभूषणः कालसिद्धिः कालसुखप्रदः कालमूर्तिः ॥

648. कालभैरवः – समय के भयकारी रक्षक, 649. कालप्रभुः –
काल के प्रभु, 650. कालसंपत् – काल से संपत्ति देने वाले,
651. कालमोचनः – काल से मोक्ष देने वाले, 652. कालभूषणः
– काल का आभूषण, 653. कालसिद्धिः – काल से सिद्धि देने
वाले, 654. कालसुखप्रदः – काल से सुख देने वाले, 655.
कालमूर्तिः – काल रूप



श्लोक 84

भूतनाथः भूतप्रभुः भूतसंपत् भूतमोचनः
भूतभूषणः भूतसिद्धिः भूतसुखप्रदः भूतमूर्तिः ॥

656. भूतनाथः – भूतों के स्वामी, 657. भूतप्रभुः – भूतों का प्रभु,
658. भूतसंपत् – भूतों से संपत्ति देने वाले, 659. भूतमोचनः –
भूतों से मोक्ष देने वाले, 660. भूतभूषणः – भूतों का आभूषण,
661. भूतसिद्धिः – भूतों से सिद्धि देने वाले, 662. भूतसुखप्रदः –
भूतों से सुख देने वाले, 663. भूतमूर्तिः – भूत रूप

श्लोक 85

विभूतनाथः विभूतप्रभुः विभूतसंपत् विभूतमोचनः
विभूतभूषणः विभूतसिद्धिः विभूतसुखप्रदः विभूतमूर्तिः ॥

664. विभूतनाथः – विभूतियों के स्वामी, 665. विभूतप्रभुः –
विभूतियों का प्रभु, 666. विभूतसंपत् – विभूतियों से संपत्ति देने
वाले, 667. विभूतमोचनः – विभूतियों से मोक्ष देने वाले, 668.
विभूतभूषणः – विभूतियों का आभूषण, 669. विभूतसिद्धिः –
विभूतियों से सिद्धि देने वाले, 670. विभूतसुखप्रदः – विभूतियों
से सुख देने वाले, 671. विभूतमूर्तिः – विभूतियों का रूप

श्लोक 86

महादेवः महाशक्तिः महाकल्पः महामोक्षदः
महाभूषणः महासिद्धिः महासुखप्रदः महामूर्तिः ॥

672. महादेवः – महान देव, 673. महाशक्तिः – महान शक्ति वाले,
674. महाकल्पः – महान कल्प देने वाले, 675. महामोक्षदः –
महान मोक्ष देने वाले, 676. महाभूषणः – महान आभूषण,
677. महासिद्धिः – महान सिद्धि देने वाले, 678. महासुखप्रदः –
महान सुख देने वाले, 679. महामूर्तिः – महान रूप



श्लोक 87

नटराजः नटराजप्रभुः नटराजसंपत् नटराजमोचनः
नटराजभूषणः नटराजसिद्धिः नटराजसुखप्रदः नटराजमूर्तिः ॥

680.नटराजः –नृत्य के स्वामी, 681. नटराजप्रभुः –नटराज का प्रभु, 682. नटराजसंपत् –नटराज से संपत्ति देने वाले, 683. नटराजमोचनः –नटराज से मोक्ष देने वाले, 684. नटराजभूषणः –नटराज का आभूषण, 685. नटराजसिद्धिः – नटराज से सिद्धि देने वाले, 686. नटराजसुखप्रदः –नटराज से सुख देने वाले, 687. नटराजमूर्तिः –नटराज रूप

श्लोक 88

महाशिवः महाकालः महादक्षिणः महातेजस्विः
महाभूतनाथः महाबलप्रदः महाशक्तिमान् महामूर्तिः ॥

688.महाशिवः –महान शिव, 689. महाकालः –समय के प्रभु, 690. महादक्षिणः –दक्षिणाभिमुख, योग्य कार्यकर्ता, 691. महातेजस्विः –महान तेजस्वी, 692. महाभूतनाथः –भूतों के स्वामी, 693. महाबलप्रदः –महान बल देने वाले, 694. महाशक्तिमान् –शक्तिशाली, 695. महामूर्तिः –महान रूप

श्लोक 89

अवतारः अवतारप्रभुः अवतारसंपत् अवतारमोचनः
अवतारभूषणः अवतारसिद्धिः अवतारसुखप्रदः अवतारमूर्तिः ॥

696.अवतारः –अवतार लेने वाले, 697. अवतारप्रभुः –अवतार का प्रभु, 698. अवतारसंपत् –अवतार से संपत्ति देने वाले, 699. अवतारमोचनः –अवतार से मोक्ष देने वाले, 700. अवतारभूषणः –अवतार का आभूषण, 701. अवतारसिद्धिः – अवतार से सिद्धि देने वाले, 702. अवतारसुखप्रदः –अवतार से सुख देने वाले, 703. अवतारमूर्तिः –अवतार रूप



श्लोक 90

त्रिनेत्रः त्रिनेत्रप्रभुः त्रिनेत्रसंपत् त्रिनेत्रमोचनः
त्रिनेत्रभूषणः त्रिनेत्रसिद्धिः त्रिनेत्रसुखप्रदः त्रिनेत्रमूर्तिः॥

704. त्रिनेत्रः - तीन नेत्रों वाले, 705. त्रिनेत्रप्रभुः - तीन नेत्रों का प्रभु, 706. त्रिनेत्रसंपत् - तीन नेत्रों से संपत्ति देने वाले, 707. त्रिनेत्रमोचनः - तीन नेत्रों से मोक्ष देने वाले, 708. त्रिनेत्रभूषणः - तीन नेत्रों का आभूषण, 709. त्रिनेत्रसिद्धिः - तीन नेत्रों से सिद्धि देने वाले, 710. त्रिनेत्रसुखप्रदः - तीन नेत्रों से सुख देने वाले, 711. त्रिनेत्रमूर्तिः - तीन नेत्रों का रूप

श्लोक 91

महाकर्पूरः महाकर्पूरप्रभुः महाकर्पूरसंपत् महाकर्पूरमोचनः
महाकर्पूरभूषणः महाकर्पूरसिद्धिः महाकर्पूरसुखप्रदः महाकर्पूरमूर्तिः॥

712. महाकर्पूरः - करपूर के समान शुद्ध, 713. महाकर्पूरप्रभुः - करपूर के समान प्रभु, 714. महाकर्पूरसंपत् - करपूर से संपत्ति देने वाले, 715. महाकर्पूरमोचनः - करपूर से मोक्ष देने वाले, 716. महाकर्पूरभूषणः - करपूर का आभूषण, 717. महाकर्पूरसिद्धिः - करपूर से सिद्धि देने वाले, 718. महाकर्पूरसुखप्रदः - करपूर से सुख देने वाले, 719. महाकर्पूरमूर्तिः - करपूर रूप

श्लोक 92

कालः कालप्रभुः कालसंपत् कालमोचनः
कालभूषणः कालसिद्धिः कालसुखप्रदः कालमूर्तिः ॥

720. कालः - समय के स्वामी, 721. कालप्रभुः - समय का प्रभु, 722. कालसंपत् - समय से संपत्ति देने वाले, 723. कालमोचनः - समय से मोक्ष देने वाले, 724. कालभूषणः - समय का आभूषण, 725. कालसिद्धिः - समय से सिद्धि देने वाले, 726. कालसुखप्रदः - समय से सुख देने वाले, 727. कालमूर्तिः - समय रूप



श्लोक 93

महाकालः महाकालप्रभुः महाकालसंपत् महाकालमोचनः
महाकालभूषणः महाकालसिद्धिः महाकालसुखप्रदः महाकालमूर्तिः॥

महाकालः – महाकाल, मृत्यु के स्वामी, 729. महाकालप्रभुः –
महाकाल का प्रभु, 730. महाकालसंपत् – महाकाल से संपत्ति
देने वाले, 731. महाकालमोचनः – महाकाल से मोक्ष देने वाले,
732. महाकालभूषणः – महाकाल का आभूषण, 733.
महाकालसिद्धिः – महाकाल से सिद्धि देने वाले, 734.
महाकालसुखप्रदः – महाकाल से सुख देने वाले, 735.
महाकालमूर्तिः – महाकाल रूप

श्लोक 94

भूतनाथः भूतनाथप्रभुः भूतनाथसंपत् भूतनाथमोचनः
भूतनाथभूषणः भूतनाथसिद्धिः भूतनाथसुखप्रदः भूतनाथमूर्तिः ॥

736. भूतनाथः – भूतों के स्वामी, 737. भूतनाथप्रभुः – भूतों का
प्रभु, 738. भूतनाथसंपत् – भूतों से संपत्ति देने वाले, 739.
भूतनाथमोचनः – भूतों से मोक्ष देने वाले, 740. भूतनाथभूषणः
– भूतों का आभूषण, 741. भूतनाथसिद्धिः – भूतों से सिद्धि देने
वाले, 742. भूतनाथसुखप्रदः – भूतों से सुख देने वाले, 743.
भूतनाथमूर्तिः – भूतों का रूप

श्लोक 95

शिवः शिवप्रभुः शिवसंपत् शिवमोचनः
शिवभूषणः शिवसिद्धिः शिवसुखप्रदः शिवमूर्तिः ॥

744. शिवः – कल्याणकारी, 745. शिवप्रभुः – शिव का प्रभु,
746. शिवसंपत् – शिव से संपत्ति देने वाले, 747. शिवमोचनः
– शिव से मोक्ष देने वाले, 748. शिवभूषणः – शिव का
आभूषण, 749. शिवसिद्धिः – शिव से सिद्धि देने वाले, 750.
शिवसुखप्रदः – शिव से सुख देने वाले, 751. शिवमूर्तिः – शिव
का रूप



श्लोक 96

महेश्वरः महेश्वरप्रभुः महेश्वरसंपत् महेश्वरमोचनः
महेश्वरभूषणः महेश्वरसिद्धिः महेश्वरसुखप्रदः महेश्वरमूर्तिः ॥

752. महेश्वरः – महान स्वामी, 753. महेश्वरप्रभुः – महेश्वर का प्रभु, 754. महेश्वरसंपत् – महेश्वर से संपत्ति देने वाले, 755. महेश्वरमोचनः – महेश्वर से मोक्ष देने वाले, 756. महेश्वरभूषणः – महेश्वर का आभूषण, 757. महेश्वरसिद्धिः – महेश्वर से सिद्धि देने वाले, 758. महेश्वरसुखप्रदः – महेश्वर से सुख देने वाले, 759. महेश्वरमूर्तिः – महेश्वर रूप

श्लोक 97

शंभुः शंभु प्रभुः शंभुसंपत् शंभुमोचनः
शंभुभूषणः शंभुसिद्धिः शंभुसुखप्रदः शंभुमूर्तिः ॥

760. शंभुः – कल्याणकारी, 761. शंभु प्रभुः – शंभु का प्रभु, 762. शंभुसंपत् – शंभु से संपत्ति देने वाले, 763. शंभुमोचनः – शंभु से मोक्ष देने वाले, 764. शंभुभूषणः – शंभु का आभूषण, 765. शंभुसिद्धिः – शंभु से सिद्धि देने वाले, 766. शंभुसुखप्रदः – शंभु से सुख देने वाले, 767. शंभुमूर्तिः – शंभु का रूप

श्लोक 98

सत्यनाथः सत्यनाथप्रभुः सत्यनाथसंपत् सत्यनाथमोचनः
सत्यनाथभूषणः सत्यनाथसिद्धिः सत्यनाथसुखप्रदः
सत्यनाथमूर्तिः ॥

768. सत्यनाथः – सत्य के स्वामी, 769. सत्यनाथप्रभुः – सत्यनाथ का प्रभु, 770. सत्यनाथसंपत् – सत्यनाथ से संपत्ति देने वाले, 771. सत्यनाथमोचनः – सत्यनाथ से मोक्ष देने वाले, 772. सत्यनाथभूषणः – सत्यनाथ का आभूषण, 773. सत्यनाथसिद्धिः – सत्यनाथ से सिद्धि देने वाले, 774. सत्यनाथसुखप्रदः – सत्यनाथ से सुख देने वाले, 775. सत्यनाथमूर्तिः – सत्यनाथ रूप



श्लोक 99

त्रिनेत्रः त्रिनेत्रप्रभुः त्रिनेत्रसंपत् त्रिनेत्रमोचनः
त्रिनेत्रभूषणः त्रिनेत्रसिद्धिः त्रिनेत्रसुखप्रदः त्रिनेत्रमूर्तिः ॥

776. त्रिनेत्रः – तीन नेत्रों वाले 777. त्रिनेत्रप्रभुः – त्रिनेत्र का प्रभु
778. त्रिनेत्रसंपत् – त्रिनेत्र से संपत्ति देने वाले 779.
त्रिनेत्रमोचनः – त्रिनेत्र से मोक्ष देने वाले 780. त्रिनेत्रभूषणः –
त्रिनेत्र का आभूषण 781. त्रिनेत्रसिद्धिः – त्रिनेत्र से सिद्धि देने
वाले 782. त्रिनेत्रसुखप्रदः – त्रिनेत्र से सुख देने वाले 783.
त्रिनेत्रमूर्तिः – त्रिनेत्र रूप

श्लोक 100

नीलकण्ठः नीलकण्ठप्रभुः नीलकण्ठसंपत् नीलकण्ठमोचनः
नीलकण्ठभूषणः नीलकण्ठसिद्धिः नीलकण्ठसुखप्रदः
नीलकण्ठमूर्तिः ॥

784. नीलकण्ठः – गले में नीला रत्न धारण करने वाले 785.
नीलकण्ठप्रभुः – नीलकण्ठ का प्रभु 786. नीलकण्ठसंपत् –
नीलकण्ठ से संपत्ति देने वाले 787. नीलकण्ठमोचनः –
नीलकण्ठ से मोक्ष देने वाले 788. नीलकण्ठभूषणः – नीलकण्ठ
का आभूषण 789. नीलकण्ठसिद्धिः – नीलकण्ठ से सिद्धि देने
वाले 790. नीलकण्ठसुखप्रदः – नीलकण्ठ से सुख देने वाले
791. नीलकण्ठमूर्तिः – नीलकण्ठ रूप

श्लोक 101

महादेवः महादेवप्रभुः महादेवसंपत् महादेवमोचनः
महादेवभूषणः महादेवसिद्धिः महादेवसुखप्रदः महादेवं मूर्तिः ॥

792. महादेवः – महान देवता 793. महादेवप्रभुः – महादेव का
प्रभु 794. महादेवसंपत् – महादेव से संपत्ति देने वाले 795.
महादेवमोचनः – महादेव से मोक्ष देने वाले 796. महादेवभूषणः
– महादेव का आभूषण



796. महादेवभूषणः – महादेव का आभूषण 797. महादेवसिद्धिः – महादेव से सिद्धि देने वाले 798. महादेवसुखप्रदः – महादेव से सुख देने वाले 799. महादेवमूर्तिः – महादेव रूप

श्लोक 102

गंगाधरः गंगाधरप्रभुः गंगाधरसंपत् गंगाधरमोचनः
गंगाधरभूषणः गंगाधरसिद्धिः गंगाधरसुखप्रदः गंगाधरमूर्तिः ॥

800. गंगाधरः – गंगा को धारण करने वाले 801. गंगाधरप्रभुः – गंगाधर का प्रभु 802. गंगाधरसंपत् – गंगाधर से संपत्ति देने वाले 803. गंगाधरमोचनः – गंगाधर से मोक्ष देने वाले 804. गंगाधरभूषणः – गंगाधर का आभूषण 805. गंगाधरसिद्धिः – गंगाधर से सिद्धि देने वाले 806. गंगाधरसुखप्रदः – गंगाधर से सुख देने वाले 807. गंगाधरमूर्तिः – गंगाधर रूप

श्लोक 103

भूतनाथः भूतनाथप्रभुः भूतनाथसंपत् भूतनाथमोचनः
भूतनाथभूषणः भूतनाथसिद्धिः भूतनाथसुखप्रदः भूतनाथमूर्तिः ॥

808. भूतनाथः – भूतों के स्वामी 809. भूतनाथप्रभुः – भूतनाथ का प्रभु 810. भूतनाथसंपत् – भूतनाथ से संपत्ति देने वाले 811. भूतनाथमोचनः – भूतनाथ से मोक्ष देने वाले 812. भूतनाथभूषणः – भूतनाथ का आभूषण 813. भूतनाथसिद्धिः – भूतनाथ से सिद्धि देने वाले 814. भूतनाथसुखप्रदः – भूतनाथ से सुख देने वाले 815. भूतनाथमूर्तिः – भूतनाथ रूप

श्लोक 104

महाकालः महाकालप्रभुः महाकालसंपत् महाकालमोचनः
महाकालभूषणः महाकालसिद्धिः महाकालसुखप्रदः महाकालमूर्तिः ॥
816. महाकालः – समय और मृत्यु के स्वामी 817. महाकालप्रभुः



-महाकाल का प्रभु 818. महाकालसंपत् -महाकाल से संपत्ति देने वाले 819. महाकालमोचनः -महाकाल से मोक्ष देने वाले 820. महाकालभूषणः -महाकाल का आभूषण 821. महाकालसिद्धिः -महाकाल से सिद्धि देने वाले 822. महाकालसुखप्रदः -महाकाल से सुख देने वाले 823. महाकालमूर्तिः -महाकाल रूप

श्लोक 105

रुद्रः रुद्रप्रभुः रुद्रसंपत् रुद्रमोचनः
रुद्रभूषणः रुद्रसिद्धिः रुद्रसुखप्रदः रुद्रमूर्तिः ॥

824.रुद्रः -भीषण और तेजस्वी 825. रुद्रप्रभुः -रुद्र का प्रभु 826. रुद्रसंपत् -रुद्र से संपत्ति देने वाले 827. रुद्रमोचनः -रुद्र से मोक्ष देने वाले 828. रुद्रभूषणः -रुद्र का आभूषण 829. रुद्रसिद्धिः -रुद्र से सिद्धि देने वाले 830. रुद्रसुखप्रदः -रुद्र से सुख देने वाले 831. रुद्रमूर्तिः -रुद्र रूप

श्लोक 106

नटराजः नटराजप्रभुः नटराजसंपत् नटराजमोचनः
नटराजभूषणः नटराजसिद्धिः नटराजसुखप्रदः नटराजमूर्तिः ॥

832.नटराजः -नृत्य के स्वामी 833. नटराजप्रभुः -नटराज का प्रभु 834. नटराजसंपत् -नटराज से संपत्ति देने वाले 835. नटराजमोचनः -नटराज से मोक्ष देने वाले 836. नटराजभूषणः -नटराज का आभूषण 837. नटराजसिद्धिः -नटराज से सिद्धि देने वाले 838. नटराजसुखप्रदः -नटराज से सुख देने वाले 839. नटराजमूर्तिः -नटराज रूप

श्लोक 107

वृषभवाहः वृषभवाहप्रभुः वृषभवाहसंपत् वृषभवाहमोचनः
वृषभवाहभूषणः वृषभवाहसिद्धिः वृषभवाहसुखप्रदः वृषभवाहमूर्तिः ॥



840. वृषभवाहः – वृषभ (बैल) पर सवार 841. वृषभवाहप्रभुः – वृषभवाह का प्रभु 842. वृषभवाहसंपत् – वृषभवाह से संपत्ति देने वाले 843. वृषभवाहमोचनः – वृषभवाह से मोक्ष देने वाले 844. वृषभवाहभूषणः – वृषभवाह का आभूषण 845. वृषभवाहसिद्धिः – वृषभवाह से सिद्धि देने वाले 846. वृषभवाहसुखप्रदः – वृषभवाह से सुख देने वाले 847. वृषभवाहमूर्तिः – वृषभवाह रूप

श्लोक 108

शिवः शिवप्रभुः शिवसंपत् शिवमोचनः
शिभूषणः शिवसिद्धिः शिवसुखप्रदः शिवमूर्तिः ॥

848. शिवः – शुभ और कल्याणकारी 849. शिवप्रभुः – शिव का प्रभु 850. शिवसंपत् – शिव से संपत्ति देने वाले 851. शिवमोचनः – शिव से मोक्ष देने वाले 852. शिवभूषणः – शिव का आभूषण 853. शिवसिद्धिः – शिव से सिद्धि देने वाले 854. शिवसुखप्रदः – शिव से सुख देने वाले 855. शिवमूर्तिः – शिव रूप

श्लोक 109

महाशिवः महाशिवप्रभुः महाशिवसंपत् महाशिवमोचनः
महाशिवभूषणः महाशिवसिद्धिः महाशिवसुखप्रदः महाशिवमूर्तिः ॥

856. महाशिवः – महान शिव 857. महाशिवप्रभुः – महाशिव का प्रभु 858. महाशिवसंपत् – महाशिव से संपत्ति देने वाले 859. महाशिवमोचनः – महाशिव से मोक्ष देने वाले 860. महाशिवभूषणः – महाशिव का आभूषण 861. महाशिवसिद्धिः – महाशिव से सिद्धि देने वाले 862. महाशिवसुखप्रदः – महाशिव से सुख देने वाले 863. महाशिवमूर्तिः – महाशिव रूप

श्लोक 110

विश्वनाथः विश्वनाथप्रभुः विश्वनाथसंपत् विश्वनाथमोचनः



विश्वनाथभूषणः विश्वनाथसिद्धिः विश्वनाथसुखप्रदः विश्वनाथमूर्तिः॥

864. विश्वनाथः – सम्पूर्ण जगत के स्वामी 865. विश्वनाथप्रभुः – विश्वनाथ का प्रभु 866. विश्वनाथसंपत् – विश्वनाथ से संपत्ति देने वाले 867. विश्वनाथमोचनः – विश्वनाथ से मोक्ष देने वाले 868. विश्वनाथभूषणः – विश्वनाथ का आभूषण 869. विश्वनाथसिद्धिः – विश्वनाथ से सिद्धि देने वाले 870. विश्वनाथसुखप्रदः – विश्वनाथ से सुख देने वाले 871. विश्वनाथमूर्तिः – विश्वनाथ रूप

श्लोक 111

त्रैलोक्यनाथः त्रैलोक्यनाथप्रभुः त्रैलोक्यनाथसंपत्
त्रैलोक्यनाथमोचनः
त्रैलोक्यनाथभूषणः त्रैलोक्यनाथसिद्धिः त्रैलोक्यनाथसुखप्रदः
त्रैलोक्यनाथमूर्तिः ॥

872. त्रैलोक्यनाथः – तीनों लोकों के स्वामी 873. त्रैलोक्यनाथप्रभुः – त्रैलोक्यनाथ का प्रभु 874. त्रैलोक्यनाथसंपत् – त्रैलोक्यनाथ से संपत्ति देने वाले 875. त्रैलोक्यनाथमोचनः – त्रैलोक्यनाथ से मोक्ष देने वाले 876. त्रैलोक्यनाथभूषणः – त्रैलोक्यनाथ का आभूषण 877. त्रैलोक्यनाथसिद्धिः – त्रैलोक्यनाथ से सिद्धि देने वाले 878. त्रैलोक्यनाथसुखप्रदः – त्रैलोक्यनाथ से सुख देने वाले 879. त्रैलोक्यनाथमूर्तिः – त्रैलोक्यनाथ रूप

श्लोक 112

सच्चिदानन्दः सत्त्विकः सदाशिवः शिवोऽहम्
सत्यनाथः सुखदः शुद्धः शशिसंखः शुभः ॥

880. सच्चिदानन्दः – सत्य, चेतना और आनंद रूप 881. सत्त्विकः – सत्त्व गुण वाले 882. सदाशिवः – सदैव शिव स्वरूप



883. शिवोऽहम् – “मैं शिव हूँ” 884. सत्यनाथः – सत्य के स्वामी 885. सुखदः – सुख देने वाले 886. शुद्धः – पवित्र और शुद्ध 887. शशिसंखः – चंद्र और शंख धारण करने वाले 888. शुभः – शुभ और कल्याणकारी

श्लोक 113

महायोगी महात्मा महाबलः महाबुद्धिः
महातेजा महाशक्तिः महाप्रभुः महेश्वरः ॥

889. महायोगी – महान योगी 890. महात्मा – महान आत्मा 891. महाबलः – अति बलशाली 892. महाबुद्धिः – महान बुद्धि वाले 893. महातेजा – तेजस्वी 894. महाशक्तिः – असीम शक्ति वाले 895. महाप्रभुः – महान प्रभु 896. महेश्वरः – महाशिव, परमेश्वर

श्लोक 114

नागनाथः नागेश्वरः नागभूषणः नागमोचनः
नागसंपत् नागसिद्धिः नागसुखप्रदः नागमूर्ति ॥

897. नागनाथः – नागों के स्वामी 898. नागेश्वरः – नागों के ईश्वर 899. नागभूषणः – नाग का आभूषण 900. नागमोचनः – नागों से मोक्ष देने वाले 901. नागसंपत् – नागों से संपत्ति देने वाले 902. नागसिद्धिः – नागों से सिद्धि देने वाले 903. नागसुखप्रदः – नागों से सुख देने वाले 904. नागमूर्तिः – नाग रूप

श्लोक 115

चंद्रनाथः चंद्रशेखरः चंद्रभूषणः चंद्रमोचनः
चंद्रसंपत् चंद्रसिद्धिः चंद्रसुखप्रदः चंद्रमूर्ति ॥



905. चंद्रनाथः – चंद्रमा के स्वामी 906. चंद्रशेखरः – चंद्र का मुकुटधारी 907. चंद्रभूषणः – चंद्र का आभूषण 908. चंद्रमोचनः – चंद्र से मोक्ष देने वाले 909. चंद्रसंपत् – चंद्र से संपत्ति देने वाले 910. चंद्रसिद्धिः – चंद्र से सिद्धि देने वाले 911. चंद्रसुखप्रदः – चंद्र से सुख देने वाले 912. चंद्रमूर्तिः – चंद्र रूप

श्लोक 116

त्रिनेत्रः त्रिनेत्रप्रभुः त्रिनेत्रसंपत् त्रिनेत्रमोचनः
त्रिनेत्रभूषणः त्रिनेत्रसिद्धिः त्रिनेत्रसुखप्रदः त्रिनेत्रमूर्ति ॥

913. त्रिनेत्रः – तीन आँखों वाले 914. त्रिनेत्रप्रभुः – त्रिनेत्र का प्रभु 915. त्रिनेत्रसंपत् – त्रिनेत्र से संपत्ति देने वाले 916. त्रिनेत्रमोचनः – त्रिनेत्र से मोक्ष देने वाले 917. त्रिनेत्रभूषणः – त्रिनेत्र का आभूषण 918. त्रिनेत्रसिद्धिः – त्रिनेत्र से सिद्धि देने वाले 919. त्रिनेत्रसुखप्रदः – त्रिनेत्र से सुख देने वाले 920. त्रिनेत्रमूर्तिः – त्रिनेत्र रूप

श्लोक 117

महाशिवाय महेश्वराय महायोगेश्वराय
महाकालाय महादेवाय शिवाय नमः ॥

921. महाशिवाय – महान शिव को समर्पित 922. महेश्वराय – परमेश्वर को समर्पित 923. महायोगेश्वराय – योग के स्वामी 924. महाकालाय – समय और मृत्यु के स्वामी 925. महादेवाय – महान देव 926. शिवाय – शिव स्वरूप

श्लोक 118

अर्धनारीश्वराय अघोराय अन्नपूर्णाय
वृषभवाहनाय त्रैलोक्यनाथाय महाशिवाय ॥

927. अर्धनारीश्वराय – पार्वती के साथ ईश्वर 928. अघोराय – भयकारी रूप वाले 929. अन्नपूर्णाय – अन्न देने



930. वृषभवाहनाय – बैल पर सवार 931. त्रैलोक्यनाथाय –
तीनों लोकों के स्वामी 932. महाशिवाय – महान शिव

श्लोक 119

विश्वनाथाय सच्चिदानन्दाय सत्त्विकाय
सदाशिवाय शिवोऽहम् सत्यनाथाय सुखदाय ॥

933. विश्वनाथाय – सम्पूर्ण जगत के स्वामी 934.
सच्चिदानन्दाय – सत्य, चेतना और आनंद रूप 935.
सत्त्विकाय – सत्त्व गुण वाले 936. सदाशिवाय – सदैव शिव
स्वरूप 937. शिवोऽहम् – “मैं शिव हूँ” 938. सत्यनाथाय –
सत्य के स्वामी 939. सुखदाय – सुख देने वाले

श्लोक 120

शुद्धाय शशिसंखाय शुभाय नागनाथाय
नागेश्वराय नागभूषणाय नागमोचनाय ॥

940. शुद्धाय – पवित्र और शुद्ध 941. शशिसंखाय – चंद्र और शंख
धारण करने वाले 942. शुभाय – शुभ और कल्याणकारी 943.
नागनाथाय – नागों के स्वामी 944. नागेश्वराय – नागों के ईश्वर
945. नागभूषणाय – नाग का आभूषण 946. नागमोचनाय –
नागों से मोक्ष देने वाले

श्लोक 121

चंद्रनाथाय चंद्रशेखराय चंद्रभूषणाय
चंद्रमोचनाय चंद्रसंपत् चंद्रसिद्ध्यै चन्द्रसुखप्रदाय ॥

947. चंद्रनाथाय – चंद्रमा के स्वामी 948. चंद्रशेखराय – चंद्र का
मुकुटधारी 949. चंद्रभूषणाय – चंद्र का आभूषण 950.
चंद्रमोचनाय – चंद्र से मोक्ष देने वाले 951. चंद्रसंपत् – चंद्र से
संपत्ति देने वाले 952. चंद्रसिद्ध्यै – चंद्र से सिद्धि देने वाले
953. चंद्रसुखप्रदाय – चंद्र से सुख देने वाले



श्लोक 122

त्रिनेत्राय त्रिनेत्रप्रभवे त्रिनेत्रसंपत्
त्रिनेत्रमोचनाय त्रिनेत्रभूषणाय त्रिनेत्रसिद्ध्यै त्रिनेत्रसुखप्रदाय ॥

954. त्रिनेत्राय – तीन आँखों वाले 955. त्रिनेत्रप्रभवे – त्रिनेत्र का प्रभु 956. त्रिनेत्रसंपत् – त्रिनेत्र से संपत्ति देने वाले 957. त्रिनेत्रमोचनाय – त्रिनेत्र से मोक्ष देने वाले 958. त्रिनेत्रभूषणाय – त्रिनेत्र का आभूषण 959. त्रिनेत्रसिद्ध्यै – त्रिनेत्र से सिद्धि देने वाले 960. त्रिनेत्रसुखप्रदाय – त्रिनेत्र से सुख देने वाले

श्लोक 123

महाशिवाय महेश्वराय महायोगेश्वराय
महाकालाय महादेवाय शिवाय नमोऽस्तु ॥

961. महाशिवाय – महान शिव 962. महेश्वराय – परमेश्वर 963. महायोगेश्वराय – योग के स्वामी 964. महाकालाय – समय और मृत्यु के स्वामी 965. महादेवाय – महान देव 966. शिवाय – शिव स्वरूप 967. नमोऽस्तु – नमस्कार

श्लोक 124

ॐ अर्द्धनारीश्वराय त्रैलोक्यनाथाय नमः

969. अर्द्धनारीश्वराय – “पार्वती के साथ ईश्वर” (जो पुरुष और स्त्री रूप में सम्पूर्ण ब्रह्मांड में प्रतिष्ठित हैं) 970. त्रैलोक्यनाथाय – “तीनों लोकों के स्वामी” (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल के रक्षक और पालनहार)

श्लोक 125

ॐ विश्वनाथाय भूतनाथाय नमः

971. विश्वनाथाय – “संपूर्ण जगत के स्वामी” 972. भूतनाथाय – “सभी जीवों और भूतों के अधिपति”



श्लोक 126

ॐ महाशक्तये महायोगिनः नमः

973.महाशक्तये – “सर्वशक्तिमान” 974. महायोगिनः – “महान योगी, योग के पालनहार”

श्लोक 127

ॐ शूलपाणये गंगाधराय नमः

975.शूलपाणये – “त्रिशूलधारी, सर्वशक्तिशाली” 976. गंगाधराय – “गंगा के धारक, निर्मलता और पवित्रता के प्रतीक”

श्लोक 128

ॐ रुद्राय रत्नाकराय नमः

976.रुद्राय – “भीषण रूप वाले रुद्र” 978. रत्नाकराय – “अमूल्य रत्नों के संरक्षक”

श्लोक 129

ॐ भस्मांगराय चन्द्रशेखराय नमः

979.भस्मांगराय – “भस्म धारण करने वाले, मोक्ष देने वाले” 980. चन्द्रशेखराय – “शिव जिनके मस्तक पर चंद्रमा विराजमान है”

श्लोक 130

ॐ कैलासपति नटराजाय नमः

981.कैलासपति – “कैलाश पर्वत के अधिपति” 982. नटराजाय – “सर्वश्रेष्ठ नर्तक, सृष्टि के संहारक और पालनहार”

श्लोक 131

ॐ पंचवक्त्राय त्रिनेत्राय नमः



983.पंचवक्त्राय – “पांच मुखों वाले, सर्वज्ञान स्वरूप”984.
त्रिनेत्राय – “तीन नेत्रों वाले, समय और सत्य के ज्ञाता”

श्लोक 132

ॐ भूतपातिनाय शंभवे नमः

985.भूतपातिनाय – “सभी प्राणियों और भूतों के स्वामी”986.
शंभवे – “संपूर्ण जगत को कल्याण देने वाले”

श्लोक 133

ॐ करालाय भैरवाय नमः

987.करालाय – “भीषण रूप वाले, भय दूर करने वाले”988.
भैरवाय – “सर्वशक्तिशाली और संहारक स्वरूप”

श्लोक 134

ॐ त्रिपुरान्तकाय महेश्वराय नमः

989.त्रिपुरान्तकाय – “त्रिपुरासुर का संहार करने वाले”990.
महेश्वराय – “महान स्वामी, सर्वोच्च देव”

श्लोक 135

ॐ धूम्रवर्णाय रुद्राय नमः

991.धूम्रवर्णाय – “धूसर रूप वाले, शांत और भीषण
स्वरूप”992. रुद्राय – “सभी प्रलयकारी रूपों के अधिपति”

श्लोक 136

ॐ चिदानन्दाय सदाशिवाय नमः

993.चिदानन्दाय – “सत्य, चेतना और आनंद स्वरूप”994.
सदाशिवाय – “सदैव कल्याणकारी शिव स्वरूप”



श्लोक 137

ॐ जटाधराय महाकालाय नमः

995.जटाधराय – “जटा धारण करने वाले, शांत और अचंचल”

996. महाकालाय – “समय और मृत्यु के स्वामी”

श्लोक 138

ॐ वृषभवाहनाय भूतनाथाय नमः

997.वृषभवाहनाय – “वृषभ (बैल) पर सवार” 998. भूतनाथाय

– “सभी प्राणियों और भूतों के स्वामी”

श्लोक 139

ॐ पार्वतीपतये महादेवाय नमः

999.पार्वतीपतये – “पार्वती के पति, स्नेह और शक्ति के स्रोत”

1000. महादेवाय – “महान देव, सभी देवों के स्वामी”

श्लोक 140

ॐ वृषध्वजाय रुद्राय नमः

1001वृषध्वजाय – “बैल ध्वज धारण करने वाले” 1002. रुद्राय –

“सभी संहार और प्रलय के रूपों के स्वामी”

श्लोक 141

ॐ कैलासनाथाय महेश्वराय नमः

1003.कैलासनाथाय – “कैलाश पर्वत के स्वामी” 1004.

महेश्वराय – “सर्वशक्तिमान और महान स्वामी”

श्लोक 142

ॐ अन्नपूर्णायै नमोऽस्तु

1005.अन्नपूर्णायै – “अन्न देने वाली, समृद्धि देने वाली”



श्लोक 143

ॐ त्रैलोक्यनाथाय नमः

1006.त्रैलोक्यनाथाय – “तीनों लोकों के स्वामी”

श्लोक 144

ॐ शूलपाणये नमः

1007.शूलपाणये – “त्रिशूलधारी, दोष और पाप नाश करने वाले”

श्लोक 145

ॐ शिवाय नमः

1008.शिवाय – “कल्याणकारी, सबके प्रति दयालु और शिव स्वरूप”

Related Article



[शिव तांडव जी स्तोत्र](#)



[शिव की कृपा का दिव्य स्रोत](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

